लई तारतम अजवालूं सार, वली श्रीजी आव्या आवार।
जाणे रखे केहेने उत्कंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं नव सहे।। ६ ।।

अब फिर से जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर श्रीजी आए हैं। किसी की भी कोई चाहना बाकी रह जाए, धनी इतना भी सहन नहीं करेंगे।

श्री धणीतणा गुण केटला कहुं, हूं अबूझ कांई घणूं नव लहुं।
पण पाधरा गुण दीसे अपार, धणिए जे कीधां आवार।। ७ ।।

धनी के गुणों का कहां तक बयान करूं? मैं नासमझी के कारण अधिक ग्रहण नहीं कर सकती। इस वार जो धनी ने कृपा की है, वह गुण बेशुमार स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

आपणी मीटे दीठां सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं।
भोम कणका जो गणाए, सायर लेहेरे उठे जल मांहें।। ८ ।।

इस नजर से मैंने देखा तो सही, पर जुबान से कहनी में नहीं आते। पृथ्वी के कण यदि कोई गिन भी ले, सागर की लहरें भी यदि कोई गिन ले (पर धनी के गुण नहीं गिने जा सकते)।

मेघ पण गाजे वली पडे, वनस्पति पत्र कोई नव गणे।
जदिपे तेहेनो निरमाण थाय, पण धणीतणा गुण कोणे न गणाय।। ९ ।।

बादलों की गरज से पड़ी बूंदें भी कोई गिन ले, वृक्षों के पत्ते कोई गिन ले, पृथ्वी के कण यदि कोई गिन ले। यह चारों चीजें गिनी नहीं जा सकती। यदि इनको कोई गिन भी ले, तो भी धनी के गुण तो गिने नहीं जा सकते।

न गणाय आ फेरा तणां, अने गुण आपणसूं कीधां अति घणां।
पेहेला फेरानी केही कहूं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ।। १० ।।

जब इस फेरे (जागनी के ब्रह्माण्ड में) के गुण जो धनी ने असंख्य किए हैं, गिने नहीं जा सकते, तो पहले फेरे की (ब्रज और रास की) बात कैसे करूं जो अपने धनी प्राणनाथ ने किए हैं।

ते आणी जोगबाईए केम गणू आधार, पण कांईक तोहे गणवा निरधार।
इंद्रावती कहे हूं गुण गणूं, कांईक दाखूं आपोपणूं।। ११ ।।

मैं इस तन और अन्य सभी साधनों से धनी के गुण कैसे गिनूं? परन्तु कुछ तो गिनना ही है। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मैं अपनापन दिखाकर धनी के गुण गिनती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २७४ ॥

श्री धणीजीना गुण

हवे गुणने लखूंजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसूं अति घणां।
जोजन पचास कोट पृथ्वी केहेवाए, आडी ऊभी सर्वे ते मांहें।। १ ।।

हे धाम के धनी! मैं आपके गुणों को लिखती हूं जो आपने मेरे साथ बेशुमार किए। पचास करोड़ योजन पृथ्वी कही जाती है। इसमें आड़ी, टेड़ी और खड़ी सब आ गईं।

Nijanand App

चौद लोक वैकुण्ठ सुन्य जेह, भोम समी हूं करूं वली तेह।
पाधरा पाथरी करूं एक ठामे, वांक चूक टालूं ए मांहें।। २ ।।

चौदह लोकों, बैकुण्ठ निराकार तक जो भूमि है, उसे फिर समान (सीधा) कर दूं। इन सबको सीधा करके बिछा दूं और इसके अन्दर का टेढ़ापन भी सब सीधा कर दूं।

कागल परठ्यूं में एहनूं नाम, गुण लखवा मारा धणी श्री धाम।
चौद भवननी लऊं वनराय, तेहेनी लेखणो मारे हाथों घडाय।। ३ ।।

इसका नाम मैंने कागज रखा। इसमें मुझे धाम धनी के गुण लिखने हैं। चौदह लोकों के वृक्षों को लेकर इनकी अपने हाथ से कलमें बनाऊं।

घडतां कोसर करूं अतिघणी, जाणूं रखे मोटी छोही पडे तेहतणी।
झीणियों टांको मारे हाथो थाय, अणियों मांहें नहीं मूकूं मणाय।। ४ ।।

कलम बनाते समय मैं बहुत कंजूसी के साथ उनके छिलके उतारूं ताकि मोटा छिलका न निकले (जिससे कलमें कम न हो जाएं)। इन कलमों की नोंक मैं अपने हाथों से बारीक बनाऊं। बनाने में कमी न करूं।

तोहे कोसर करूं घडतां अति घणी, जाणू जेमने झीणियों थाय अति अणी।
हवे धरती उपला लऊं सर्व जल, बीजापण भरया सात पातालना तल।। ५ ।।

फिर भी इनकी नोंक बनाने में बहुत कंजूसी करूं, जिससे नोंक और भी बारीक बन जाए। अब धरती के ऊपर का सारा जल इकट्ठा करूं और साथ-साथ सात पातालों का भी जल इकट्ठा कर लूं।

बीजा रे छ लोक तेहेना लऊं जल, नहीं मूकूं किहांए टीपूं अवल।
सर्व जल मेलवीने लऊं मारे हाथ, गुण लखवा मारे श्री प्राणनाथ।। ६ ।।

ऊपर के छः लोकों का भी जल इकट्ठा करूं और कहीं भी एक बूंद बाकी न छोड़ूं। इस सब जल को मैं अपने हाथ से धनी के गुण लिखने के लिए मिला लूं।

स्याही करूं अति जुगते करी, रखें कांई मांहेंथी जाय परी।
ए लेखणो स्याही आ कागल करी, माहें झीणां आंक लखूं चित धरी।। ७ ।।

उस जल की अति सावधानी से स्याही बनाऊं कि स्याही कहीं गिर न जाए। इस प्रकार की लेखनी, स्याही और कागज बना करके सावधानी से बारीक अंक लिखूं।

गुण जे कीधां मोसूं मारा वालैया, ते आंणी जिभ्याए नव जाय कह्या।
देह सारूं हूं लखूं प्रमाण, एक अर्ध अणूमात्रनुं काढूं निरमाण।। ८ ।।

मेरे वालाजी ने जो मेरे ऊपर गुण (मेहर, कृपा, एहसान) किए हैं, वह इस जुबान से नहीं कहे जा सकते। मैं अपनी देह की शक्ति से लिखती हूं। आपके एक चौथाई अंक का वर्णन करती हूं।

हवे लखूं छूं तमे जोजो साथ, हूं गजा सारूं करूं प्रकास।
घणूं चीफूं आंक लखतां एह, रखे जाणूं कांई मींडा मोटा थाय तेह।। ९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब तुम देखना, मैं धनी के गुण लिखती हूं। अपनी बुद्धि के अनुसार जाहिर करती हूं। अंक लिखने में भी मैं बड़ी कंजूसी करती हूं। कहीं कोई बिन्दी मोटी न हो जाए।

Nijanand App

हवे प्रथम एकडो काढूं एक चित, अडतूं मींडूं धरूं भिलत।
मारे हाथे अखर पोहोलो नव थाय, अने बीहुं जाणूं रखे घेलाय।। १० ।।

अब सबसे पहले ध्यान से एक का अंक लिखती हूं। उसी से मिलाकर एक बिन्दी रखी है। मेरे हाथ से अक्षर चौड़ा न हो जाए और डरती हूं कि अंक फैल न जाए।

एम करता ए दसज थया, मींडूं मूकीने एक सो गणया।
वली एक मूकूं नव करूं वार, जेम गुण गणूं मारा धणीना हजार।। ११ ।।

इस तरह से यह दस हुए। एक बिन्दी और रखकर सौ की गिनती की। फिर एक और बिन्दी रखने में देरी न करूं, जिससे अपने धनी के गुण हजार तक गिन लूं।

हवे मींडूं मूकूं अडतूं एक, जेम गुण गणूं दस हजार वसेक।
वली एक मूकतां लाख गणाय, हवे मूकूं जेम दस लाख थाय।। १२ ।।

अब फिर एक बिन्दी साथ में रखूं जिससे गुण दस हजार गिन लूं। फिर एक बिन्दी रखके एक लाख गिनूं। फिर एक बिन्दी रखूं तो दस लाख हो जाए।

कोट थाय मींडूं मूके सातमूं, दस कोट करूं वली मूकी आठमूं।
नव मूकीने करूं अबज, गुण गणती जाऊं करती कवज।। १३ ।।

सातवीं बिन्दी रखकर करोड़ की गिनती करूं। आठवीं बिन्दी रखकर दस करोड़ की गिनती करूं। नौवीं बिन्दी रखकर अरब (अबज) की गिनती गिनूं। धनी के गुण गिनती जाऊं और अपने दिल में रखती जाऊं।

दस मूकीने करूं अबज दस, ए गुण गणतां मूने आवे घणों रस।
अग्यार मूकीने करूं खरबज एक, लखतां गुण धणी ग्रहूं वसेक।। १४ ।।

दसवीं बिन्दी रखकर दस अरब की गिनती गिनूं। यह गुण गिनने में मुझे बड़ा आनन्द आता है। ग्यारहवीं बिन्दी रखकर एक खरब की गिनती गिनूं और लिखते हुए धनी के गुणों को खास कर ग्रहण करती जाऊं।

बार करीने दस करूं खरब, आगे कोणे नव गणया गुण एव।
तारतम जोतां बीजो कोण गणसे, अम टाली कोई थयो न थासे।। १५ ।।

बारहवीं बिन्दी रखकर दस खरब की गिनती गिनूं। हमसे पहले इस प्रकार से धनी के गुण किसी ने नहीं गिने। तारतम के ज्ञान के बिना दूसरा कौन गिनेगा? हमारे अलावा न कोई ऐसा हुआ है न होगा।

हवे गुण गणूं मारा धणीतणां, पण कागल स्याही लेखणो मांहें मणां।
मणां तो कहूं छूं जो बेठी माया मांहें, नहीं तो मणां मूने नथी कोई क्यांहें।। १६ ।।

अब मैं अपने धनी के गुण गिनती हूं, परन्तु कागज, स्याही और लेखनी की कमी है। मैं माया में बैठी हूं, इसलिए कमी लग रही है। नहीं तो किसी तरह की भी कमी नहीं है।

साथ माटे हूं करूं रे पुकार, जोऊं वासना चौद लोक मंझार।
मेली वासनाओने रास रमाडुं, धणीना गुण हूं गणीने देखाडुं।। १७ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते मैं पुकार करके कहती हूं। चौदह लोकों में अपनी आत्माओं को ढूंढती हूं। ब्रह्मसृष्टि को इकट्ठा करके उनको रास खिलाएं और धनी के गुण गिनकर दिखाएं।

Nijanand App

नील करूं मींडा मूकीने तेर, ए गुण गणतां मूने टली गयो फेर।
हवे चौद करूं दस नीलने काज, गुण गणवा मारा धणी श्री राज।। १८ ।।

तेरहवीं बिन्दी रखकर नील की गिनती करूं। ऐसे गुण गिनने में मेरा फेरा (चक्कर) सफल हो जाए (जीवन सफल हो जाए)। अब दस नील के वास्ते चौदहवीं बिन्दी रखूं, क्योंकि मुझे तो धाम धनी के गुण गिनने हैं।

पनर करीने करूं गुण पार, दस पार करूं सोल गुणने आधार।
पदम करवाने करूं सतर, हूं अरधांग मारो धणी ए घर।। १९ ।।

पन्द्रहवीं बिन्दी रखकर एक पार की गिनती गिनूं और सोलहवीं बिन्दी रखकर दस पार की गिनती गिनूं। सत्रहवीं बिन्दी रखकर पदम की गिनती गिनूं। मैं अर्द्धांगिनी हूं, यह मेरे धनी और यह मेरा घर है।

अढार करीने दस करूं पदम, मूने वाला लागे धणीना गुण एम।
खोईण करूं करीने नव दस, गुणने बंधाई वालो आव्यो मारे वस।। २० ।।

अठारहवीं बिन्दी रखकर दस पदम की गिनती लिखूं। इस तरह से मेरे धनी के गुण मुझे बड़े प्यारे लगते हैं। उन्नीसवीं बिन्दी रखकर खोईण की गिनती करूं तो इस गुण के एहसान के बन्धन में वालाजी मेरे वश में आ जाएं।

वीस करीने दस करूं खोईण, एकवीस करूं जेम थाय गुण जोण
दस जोण करूं मूकीने दस बार, गुण गणतां घणूं जीती आधार।। २१ ।।

बीसवीं बिन्दी रखकर दस खोईण की गिनती करूं। इक्कीसवीं बिन्दी रखकर जोण की गिनती करूं। बाईसवीं बिन्दी रखकर दस जोण की गिनती गिनूं। गुण गिनते-गिनते धनी को जीतती जाऊं।

अंक करूं गुण लखीने त्रेवीस, दस अंक करूं मींडा मूकीने चोवीस।
हवे पचवीस कीधे गुण एक संख थाय रदे रे मोटो गुण घणा समाय।। २२ ।।

तेईसवीं बिन्दी रखकर अंक की गिनती करूं। चौबीसवीं बिन्दी रखकर दस अंक की गिनती करूं। अब पच्चीसवीं बिन्दी रखकर एक संख की गिनती गिनूं। मेरा हृदय बहुत बड़ा है, उसमें धनी के गुण समाते जाते हैं।

हवे छवीस करीने करूं दस संख, वली लखतां लखतां चीपूं निसंख।
सुरिता करूं मींडा मूकीने सतावीस, ए गुण धणी जोई हूं पगला भरीस।। २३ ।।

अब छब्बीसवीं बिन्दी रखकर दस संख की गिनती गिनूं। फिर लिखते-लिखते कंजूसी करती हूं। अब सत्ताईसवीं बिन्दी रखकर सुरिता तक गिनूं। ऐसे धनी के गुण देखकर मैं उनके कदमों पर कदम रखूंगी।

अठावीसे दस सुरिता थाय, वीस नव करूं जेम पती गुण ग्रहाय।
दसपती गुण हूं त्रीसज करूं, ए गुण गणी मारा चितमां धरूं।। २४ ।।

अट्ठाईसवीं बिन्दी रखकर दस सुरिता की गिनती गिनूं। उनतीसवीं बिन्दी रखकर पती तक के गुण ग्रहण करूं। तीसवीं बिन्दी रखकर दस पती तक के गुण गिनूं और यह सब गुण गिनकर मैं अपने चित्त में धरूं।

Nijanand App

एकत्रीसे एम अंत केहेवाय, वली लेखणो कागल स्याहीनी चिंता थाय।
जाणूं रखे खपी जाय अध विच, त्यारे केम गुण गणीने ग्रहीस मारे चित।। २५ ।।

इकत्तीसवीं बिन्दी रखकर अन्त तक की गिनती गिनूं। फिर लेखनी, कागज और स्याही की चिन्ता हो रही है, मानो लिखते-लिखते बीच में ही खत्म न हो जाएं। फिर धनी के गुण गिनकर चित्त में कैसे धारण करूंगी ?

बत्रीस करीने दस अंतज करूं, ए गुण एकांत मारा चितमां धरूं।
मध गुण करूं त्रेतीसज करी, रखे कागल स्याही लेखणो जाय वरी।। २६ ।।

बत्तीसवीं बिन्दी रखकर दस अन्त की गिनती करूं। यह सभी गुण एकान्त में अपने चित्त में धरूं। तैतीसवीं बिन्दी रखकर मध की गिनती गिनूं। ऐसा न हो कि कागज, स्याही और लेखनी खत्म हो जाए।

हवे दस मध करूं करीने चोंत्रीस, गुण मारा वालाना चितमां ग्रहीस।
हवे एकडा ऊपर पांत्रीस मींडा धरूं, परार्ध करीने लेखो मारो करूं।। २७ ।।

अब चौतीसवीं बिन्दी रखकर दस मध की गिनती गिनूं और अपने वालाजी के गुणों को चित्त में रखूं। अब फिर एक के अंक के ऊपर पैंतीसवीं बिन्दी रखूं और परार्ध की गिनती करूं।

एणे लेखे कांई गणती न थाय, मारा धणीतणां गुण एम न गणाय।
हवे लेखो करूं साथ जो जो विचार, लखवा गुण मारा प्राणना आधार।। २८ ।।

एक तरह से देखो तो गिनती ऐसे नहीं होती। मेरे धनी के गुण इस तरह से नहीं लिखे जाते। अब मैं हिसाब करती हूं। हे सुन्दरसाथ! विचार करके देखो, क्योंकि अपने प्राणाधार धनी के गुण लिखने हैं।

एक मींडे थाय परार्ध गणां, एणी सनंधें वाधे बीजे एह तणां।
एम करतां ए जेटला थाय, वली एहेना एटला गुण गणाय।। २९ ।।

एक बिन्दी रखने से धनी के गुण परार्ध गुना बढ़ जाते हैं और इसी तरह से धनी के दूसरे गुण बढ़ते रहते हैं। ऐसा करने में जो गिना गया है फिर से इसी प्रकार से इतने सभी गुण गिनते जाएं।

ए गुण मारा जीवमां ग्रहाय, पण बीहती लखूं जाणुं रखे कागले न समाय।
लेखणोनी मूने चिंता थाय, जाणूं घडतां घडतां रखे उतरी जाय।। ३० ।।

इन गुणों को गिनकर मैं अपने जीव में ग्रहण करती हूं, पर डरती हूं कि कहीं ऐसा न हो कि लिखने से कहीं कागज में न समाये। कलमों की चिन्ता हो रही है कि नोंक बनाते-बनाते कलमें ही खत्म न हो जाएं।

हूं ता स्याहीनी पण करूं छूं जो वाण, जाणूं रखे लखतां न पोहोंचे निरवाण।
एम मूकतां मूकतां मींडा रह्या भराय, कागल स्याही लेखणो खपी जाय।। ३१ ।।

मैं तो स्याही की भी कंजूसी करती हूं। ऐसा न हो कि लिखते-लिखते अन्त तक न पहुंचे (कहीं बीच में खत्म न हो जाए)। इसलिए बिन्दी रख-रखकर लिखने से कागज भर गया। स्याही और कलमें खत्म हो गई।

ए कागल एम रह्यो भराई, कोरमेर सघली रही समाई।
कीडी पग मूकवानो नथी क्याहें ठाम, किहां ने मूकूं मींडूं जेहेनूं नाम।। ३२ ।।

यह कागज ऐसा भर गया कि चारों किनारों से भी बिन्दयों से भर गया। अब चींटी के पग भर भी जगह नहीं बची, तो जिसे बिन्दी कहते हैं उसे कहां रखूं?

Nijanand App

हवे ए गुण गण मारा जीव तूं रही, जेम जाणजे तेम राखजे ग्रही।
ए गुणतां में घणुं ए गणाय, पर मारा धणीतणां गुण एहमा न समाय।। ३३ ।।

हे जीव! तू अब गुण गिनकर जैसा बने वैसा हृदय में रख। यह तो मैंने बड़ी कठिनाई से गिने हैं, परन्तु मेरे धनी के गुण इसमें समाते नहीं हैं।

हवे वली करूं बीजो लखवानो ठाम, लखवा गुण मारा धनी श्री धाम।
जेटला गुण ए माहें थया, एटली दाण एहवा कागल भरया।। ३४ ।।

अब दूसरा लिखने का ठिकाना सोचती हूं। मुझे अपने धाम धनी के गुण लिखने हैं। जितने गुण इस कागज में लिखे गए, उतनी ही बार ऐसे कागज भरे गए।

एवा कागल एवी स्याही लेखण, माहें झीणा आंक लख्या अतिघण।
ए लेखणोंनी में जोई अणी, पण हजी कांई करी न सकी झीणी अतंत घणी।। ३५ ।।

यह कागज, यह स्याही और यह कलमें तथा बारीक अंक बहुत ज्यादा लिखे। मैंने लेखनी की नोंक भी देखी और इससे अधिक बारीक नोंक नहीं कर सकी।

जेटला गुण ए गणतां थाय, ए गुण मारा जीवमां समाय।
लेखणो करवाने बुध करे छे बल, घडूं ने समारूं सहु काढीने बल।। ३६ ।।

जितने गुण इस गिनती में हुए यह गुण मैंने अपने जीव में रखे। मेरी बुद्धि इन सबका हिसाब करना सोचती है और पूर्ण शक्ति से इसका हिसाब रखना चाहती है।

कथुआना पगनो गुण जेटलो भाग, लेखणोंनी टांको में चीरियों जोई लाग।
एणी टांके आंक लख्या एम करी, एटली दाण एहवा कागल फरी फरी।। ३७ ।।

कथुवा (वह कीड़ा जो कागज खाता है, वह इतना छोटा होता है कि उसे दूरबीन से ही देखा जाता है) के पैर के हिस्से के समान मैंने कलमों की नोंक चीरकर बनाई। इस तरह की नोंकों से ऐसे बारीक अंक लिखे और बार-बार ऐसे कागज भरे।

एम लखी लखीने में गणया गुण, पण मारा धणी तणा गुण छे अतिघण।
ए गुण मलीने जेटला थया, ते तां में मारा जीवमां ग्रह्या।। ३८ ।।

ऐसे लिख-लिखकर मैंने धनी के गुण गिने, परन्तु मेरे धनी के गुण तो बहुत अधिक हैं। यह गुण गिनकर जितने हुए, वह सब मैंने जीव में ग्रहण कर लिए।

ए लखतां मूने केटली थई छे वार, हवे एहेनो निरमांण काढवो निरधार।
गुण जेतमों भाग एक खिणनो आधार, एटली थई छे मूने लखतां वार।। ३९ ।।

इन गुणों को गिनने में समय कितना लगा, इसका भी हिसाब लिखना है। जितने गुण गिने हैं एक पल के उतने ही टुकड़े करो, तो इतने ही समय में मैंने गुण लिखे हैं।

एम लखी लखीने में लख्या अपार, हवे वली जोऊं केटली थई मूने वार।
गुण जेटला महाप्रले थाय, एम लख्या में तेणें ताय।। ४० ।।

इस तरह से लिख-लिखकर मैंने बेशुमार गुण लिखे। अब फिर देखती हूं कि मुझे कितना समय लगा। जितने गुण लिखे उतने ही महाप्रलय बीते। उसी जोश में मैंने सारे गुणों को लिखा है।

Nijanand App

वचमां स्वांस न खाधो एक, वेल न कीधी कांई लखतां वसेक।
एहेनो में सरवालो किध, श्री सुंदरबाईए सिखामण दिध।। ४१ ।।

गुण लिखते समय थोड़ा भी समय गंवाया नहीं। इसका मैंने हिसाब लगाया, तो (श्यामाजी ने) सुन्दरबाई ने यह मुझे सिखापन (शिक्षा) दिया।

हवे जो जो साथ लेखूं एम लख्यूं जोर, तोहे मारा जीवनी हामनी न चंपाणी कोर।
जीव छे मारो मोटो पात्र, हजी जीव जाणे ए लख्यूं तुछ मात्र।। ४२ ।।

हे सुन्दरसाथ! अब देखो मैंने यह सब लिखा, फिर भी मेरे जीव की चाह पूरी नहीं हुई। जीव का पात्र बहुत बड़ा है। सारे गुण उसमें रखने के बाद लगता है कि वह पात्र अत्यधिक खाली है।

गुण तो पाछल हजी भरया भंडार, गुण जेटला भंडार में गणियां आधार।
गणतां गणतां पाछल दीसे अपार, तेहेनो निरमाण काढवो निरधार।। ४३ ।।

गुणों के तो अभी पीछे भण्डार भरे पड़े हैं। जितने धनी के गुण हैं, उतने ऐसे भण्डार के भण्डार गिने। फिर भी गिनते-गिनते पीछे अपार गुण दिखते हैं। उनका भी हिसाब निश्चित रूप से निकालना ही है।

हूं नव काढूं तो बीजो काढे कोंण, निरमाण काढी ग्रहूं धणीतणा गुण।
पाछला भंडारनूं लेखूं दऊं वल्लभ, ए लेखूं करतां मूने नथी रे दुर्लभ।। ४४ ।।

इन गुणों का हिसाब मैं नहीं निकालूंगी, तो दूसरा और कौन निकालेगा? हिसाब निकाल कर धनी के गुणों को ग्रहण करूंगी। अपने प्रीतम को पीछे बचे हुए गुणों के भण्डार का हिसाब दूंगी। यह हिसाब करना भी मुझे कठिन नहीं है।

सर्वे गुण गणी जीवे कीधां मारे हाथ,हूं तां प्रगट कहूं छूं मारा प्राणना नाथ।
ए सर्वे तो कहूं जो गुण ऊभा थाय, गुण मननी पेरे वाधता जाय।। ४५ ।।

सब गुणों को गिनकर जीव ने मेरे सुपुर्द कर दिए। फिर भी मेरे प्राणनाथ के गुण तो पल-पल में बढ़ते ही हैं। यह सब तो सम्भव हो, यदि गुण स्थिर रहें। गुण तो मन की गति के अनुसार बढ़ते जाते हैं।

एक खिण में वहेच्यूं मारा श्री राज, ए गुण जेटला कीधां तेहेना भाग।
तेहेवा एक भागना में ए गुण कह्या, ए सर्वे मारा जीवमां ग्रह्या।। ४६ ।।

एक पल के मैंने उतने हिस्से किए जितने गुण हैं। फिर उसके एक हिस्से के गुणों को मैंने कहा है और जीव में ग्रहण किया है।

ए गुण गणतां मारा कारज सरया, भलेरे मायामां आपण देह धरया।
आखा अवतारनी केही कहूं वात, कांईक प्रेमल रदे मूने आवी प्राणनाथ।। ४७ ।।

यह गुण गिनते-गिनते मेरे काम सिद्ध हो गए। भले ही हमने माया में देह धारण की है। सभी अवतार जो पांच बार आए, उनकी कैसे बात करूं? उनमें से अपने प्राणनाथ की मुझे थोड़ी-सी पहचान हुई है (सुगन्ध मिली है)।

Nijanand App

ए गुण गणिया में निद्रा मंझार, नहीं तो एम केम गणूं मारा जीवना आधार।
हवे वातडियो करसूं इछा तमतणी, आंही जाग्यानी मूने हाम छे घणी।। ४८ ।।

इन गुणों की गिनती मैंने झूठे शरीर से माया में की है। नहीं तो मेरे प्राणों के आधार के गुण क्या ऐसे गिने जाते हैं? हे धनी! अब आपकी इच्छानुसार ही बात करूंगी। इस संसार में जागने की मुझे यहां प्रबल इच्छा है।

वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथ तणी मत माया ए गई फरी।
हवे अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरे, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सूं करे। ४९ ।।

हे वालाजी! तुम देह धारण कर इस माया में आए हो। साथ की बुद्धि माया में बदल गई है। घर में जागने पर बड़ी हंसी होगी, क्योंकि सब सुन्दरसाथ ने खेल मांगने से पहले कहा था कि माया हमारा क्या करेगी?

तमे ततखिण लीधी अमारी खबर, लई आव्या तारतम देखाड्या घर।
आपण जाग्या पछी हांसी करसूं जोर, घरने विसारी माया ए कीधा चोर।। ५० ।।

हे धनी! आपने तुरन्त ही हमारी यहां खबर ली और जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर घर की पहचान कराई। अब परमधाम में जागने के बाद खूब हंसी करेंगे। माया ने हमें अपने घर को भुलाकर चोर की तरह बिठा रखा है।

हवेने करसूं जाग्या पछी वात, कांई अमल चढ्यूं छे साथने निघात।
तारतम केहेता हजी वले न सार, नहीं तो अनेक विधे कह्यूं प्राणने आधार।। ५१ ।।

अब घर में जागने के बाद आपसे बात करूंगी। यहां सब साथ माया के नशे (बहुत अधिक) में बेहोश पड़े हैं। तारतम से भी इनको होश वापस नहीं आ रहा है। प्राणाधार ने इनको तरह-तरह से समझाया भी है।

इंद्रावती लिए भामणा गुण जेटला, तमे आंही सुख दीधा अमने एटला।
घरना सुखनी आंही केही कहूं वात, हवे सुख घरना नी घेर करसूं विख्यात।। ५२ ।।

हे धनी! आपने यहां मुझे इतने अधिक सुख दिए हैं। जितने आपके गुण हैं। यदि उतनी बार भी मैं कुर्बान हो जाऊं तो भी कम है। फिर परमधाम के सुख की बात यहां क्या करूं? घर के सुख की वातें घर पर ही करेंगे।

चरणे लाग कहे इंद्रावती, गुण न देखे किन एक रती।
धणी जगाडी देखाडसे गुण, हांसी थासे त्यारे अति घण।। ५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि किसी ने भी वालाजी की मेहर को नहीं देखा। जब वालाजी परमधाम में जगाकर अपनी मेहर (कृपा) बताएंगे तो बहुत बड़ी हंसी होगी।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३२७ ॥

सांभलो साथ मारा सिरदार, वचन कहूं ते ग्रहो निरधार।
एटला गुण आपणसूं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी।। १ ।।

हे मेरे श्रेष्ठ सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो वचन कहती हूं उनको ग्रहण करो। धनी ने हमारे ऊपर बड़ी मेहर की है और हमारे बीच माया में तन धारण करके बैठे हैं।

Nijanand App